ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 498-502

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

साहित्यिक पत्रकारिता के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द

दयानन्द पाण्डेय
सहायक प्रोफेसर, श्री गुरू गोरक्षनाथ पी0जी0कालेज, जोगिया घुघली–महराजगंज (उ0प्र0) भारत

Received- 04.08.2020, Revised- 09.08.2020, Accepted - 12.08.2020 E-mail: - dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : *पत्रकारिता अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है, जो समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों, समस्याओं से संघर्ष करती है। सत्यं, शिवम, सुन्दरम की प्राप्ति ही इसका मूल उद्देश्य है। मानवीय मूल्यों की सतत पूर्ति करना ही पत्रकारिता का उत्तरदायित्व है। पत्रकारिता देशवासियों में राष्ट्रीयता व विश्वबन्धुत्व का संचार करती है। सद्विचारों की अभिव्यक्ति, पवित्र भावों की अनुभूति और नैतिकता की पावन पीठिका ही पत्रकारिता का मूल उद्देश्य है। साहित्यिक पत्रकारिता की मूल आत्मा साहित्य होती है। इसमें साहित्यिक गतिविधियों का पत्रकारिता के ढंग से सशक्त निरूपण होता है। पत्रकारिता साहित्य का अंग है और साहित्य दर्शन का ही भाग है, क्योंकि यह जीवन को दिशा, प्रेरणा, जिजीविषा, ऊर्जा, रस प्रदान करता है। साहित्य से जहाँ पत्रकारिता को सशक्त भाषा, अभिव्यक्ति एवं आधार मिलता है तो दूसरी ओर पत्रकारिता साहित्य को विस्तार एवं नये आयाम देकर उसे जनमानस तक पहुंचाता है। नाम दो हैं पर सूक्ष्म निरीक्षण किया जाय जो पत्रकार एवं साहित्यकार में कोई अन्तर नहीं है। पत्र–पत्रिकाएँ साहित्य की विधाओं की जन्मदात्री रही हैं। राष्ट्र की आकांक्षाओं, विचारों और प्रेरणाओं की वाहिका के रूप में पत्रों ने हिन्दी को राष्ट्रवाणी का रूप दिया। हिन्दी सम्बन्धी सभी आन्दोलन पत्रों द्वारा सशक्त हुए। निबन्ध, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्त, गद्य–गीत, संस्करण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, डायरी, आलोचना, समालोचना, समीक्षा, पत्र–पत्रिकाएं आदि विधाओं को पत्रों ने पुष्पित–पल्लवित किया है। यह निर्विवाद है कि हिन्दी के उन्नायक प्रथमतः पत्रकार थे, बाद में साहित्यकार हुए। पत्रकारिता को साहित्यकार की पहली सीढ़ी कहा गया है। साहित्य की विभिन्न विधाओं के संकलन, संचयन, सम्पादन, संशोधन, संयोजन, मुद्रण, प्रकाशन आदि से सम्बद्ध कार्यों को साहित्यक पत्रकारिता कहते हैं।*

कुंजीभूत शब्द– पत्रकारिता, सशक्त, कुरीतियों, अंधविश्वासों, समस्याओं, मानवीय, अभिव्यक्ति, विश्वबन्धुत्व।

भारतीय पत्रकारिता की कहानी को भारतीय राष्ट्रीयता के विकास की कहानी माना जाता है, क्योंकि दोनों के विकास एक दूसरे के सम्पूरक हैं। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से पूर्व कुछ पत्रों ने इस आन्दोलन का प्रचार और समर्थन किया। परन्तु अंग्रेज सरकार ने अपनी दमनकारी नीतियों द्वारा सभी को कुचल दिया। सन् 1867 ई0 तक सम्पूर्ण भारत विदेशी विचारधारा से प्रभावित हो गया था। इस समय की शिक्षा पर पाश्चात्य रंग जमा हुआ था। ऐसी शिक्षा के प्रचार के कारण परम्परावादी विचारधारा नष्ट हो गयी थी और समाज में अनेक नव सुधारवादी संस्थाओं का प्रादुर्भाव हो रहा था। इन संस्थाओं का निर्माण समाज के नव शिक्षित वर्ग ने किया। ऐसे शिक्षितों में भारतेन्दु का स्थान सर्वोपरि है। भारतेन्दु के आगमन से हिन्दी पत्रकारिता को विकसित होने और फलने–फूलने का पूरा अवसर प्राप्त हुआ।

भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र ने 'कविवचन सुधा' के माध्यम से हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता की जो नींव रखी, उसी पर आगे के पत्रकारों, सम्पादकों और लेखकों ने हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता का वह आदर्श महल तैयार किया जिसकी ऊँचाई को पाने के लिए स्वातंत्र्योत्तार काल की पत्रकारिता संघर्षरत है। भारतेन्दु को हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता का जनक कहा जा सकता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने साहित्यकारों एवं पत्रकारों का ऐसा मण्डल तैयार किया जो उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य करता रहा। हिन्दी पत्रकारिता को जीवित रखने के लिए इस युग के पत्रकारों ने हिन्दी समाचार पत्रों की स्वतंत्रता और हिन्दी भाषा की रक्षा तथा उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्न किए। सम्पादकों का जीवन संघर्ष एवं त्यागमय था। वास्तव में भविष्य में जो जागृति देश में उत्पन्न हुई उसका समारम्भ इसी युग में हुआ। भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र पत्रकारिता के पुरोहित थे। हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सन् 1867 ई0 के अगस्त महीने में मासिक पत्रिका 'कविवचन सुधा' का प्रकाशन किया। 15 अगस्त 1867 भादो शुद्ध 15 सं0 1924 को 'कविवचन सुधा' का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ। लाईट छापे खाने से श्री गोपीनाथ पाठक ने इसे मुद्रित किय। पत्र के अंतिम आवरण पृष्ठ पर छपे विज्ञापन से पत्रिका सम्बन्धी विविध सूचनाएँ प्राप्त होती है, जो द्रष्टव्य है। इस्तहार–"विदित हो कि सुरसिकों और

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

गुण ग्राहकों को 'कवि वचन सुधा' अर्थात जो की हर महीने में एक बार प्राचीन कवियों के रचित काव्य 16 पृष्ठ छापे जायेंगे उसको खरीदना मंजूर हो कृपा करके खत बनाम बाबू हरिश्चन्द्र मुहल्ला चौखम्भ बनारस में भेजे या बनाम गोपीनाथ पाठक मोहतिम लाईट प्रेस मुहल्ला दसाश्वमेध में भेजे दाम पहले पृष्ठ में लिखा है। और पहिले पहिल जिस महात्मा के यहाँ भेजा जाय उनको लेना हो इतिला दे नहीं उसी समय फेर दें और न फेरेंगे तो यह समझा जाएगा कि उन्हें लेना मंजूर है। फिर बराबर भेजा जायेगा और जो लोग इसकी मदद करेंगे उनके नाम भी प्रकाशित किए जाएंगे।''

'कविवचन सुधा के मुख्य पृष्ठ पर मूल्य अंकित है–

दाम पेशगी साल
महसूल सहित साल–दो रूपए चार आना
बिना महसूल–एक रूपये आठ आना
दाम बाद साल
महसूल सहित–दो रूपए बारह आना
बिना महसूल–दो रूपये।।''

'कवि वचन सुधा' अपने प्रकाशन काल से ही कभी समय पर प्रकाशित नहीं हो सका। फलतः तीन वर्षों में उसका एक वर्ष पूरा हुआ। पहले वर्ष में 'कविवचन सुधा' का सिद्धान्त वाक्य था–

''नित नित नव यह कवि वचन सुधा सकल रस खानि।
की अहु रसिक अनन्द भरि परम लाभ जिय जानि।।
सुधा सदा सुरपुर बसै सो नहीं तुम्हरे लोग।
तासो आदर देहु अरू पिअहु महि बुध लोग।''

'कवि वचन सुधा' का दूसरा वर्ष सन् 1871 ई0 में शुरू हुआ और उसे 'पाक्षिक' बना दिया गया। दूसरे वर्ष में उपर्युक्त सिद्धान्त वाक्य में अतिरिक्त दूसरा सिद्धान्त वाक्य यह भी छपने लगा–

''खल जनन सो सज्जन दुखी मति होंहि, हरिपद मति रहै।
अपधर्म छटै, स्वत्व निज भारत गहै, सब दुख बहै।।
बुझत जहिं सत्सर, नारि नर सम होहिं, जग आनन्द लहै।
तजि ग्राम कविता, सुकविजन की अमृतवानी सब कहै।।''

भारतेन्दु ने जब 'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन किया तब उनकी उम्र 17 साल की थी। वह कवि ह्रदय बाला समय था। अतः हिन्दी कविता का विकास उस पत्रिका का लक्ष्य था। इस दृष्टि से उसमें प्राचीन कवियों की कविताएँ तथा समकालीन कवियों की रचनाएँ की गयीं। मुख्य रूप से ब्रजभाषा कविताओं की प्रधानता थी। पत्र के प्रथमांक में देवकवि का अष्टायाम, दीन दयाल गिरि का 'अनुराग राग', 'चन्द्र का रासो', जायसी का पद्मावत, विद्यापति के दोहे, गिरधरदास का नहुष नाटक हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हुआ था।

'कवि वचन सुधा' शीघ्र ही मासिक से पाक्षिक हो गयी और उसमें पद्य के साथ गद्य का भी समावेश होने लगा। पाक्षिक 'कवि वचन सुधा' में स्वाधीनता परक राजनीति लेख छपते थे। सर्वश्री राधारमण गोस्वामी, गदाधर सिंह, काशीनाथ सिंह खत्री, अम्बिकादात्त व्यास, तोता राम वर्मा आदि ने इस पत्रिका को गौरवान्वित किया।

सन् 1875 ई0 में 'कवि वचन सुधा' साप्ताहिक रूप में छपने लगी। भारतेन्दु ने 'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन सन् 1875 ई0 तक ही यानि 7वें खण्ड तक किया। इसके बाद पत्र धड़फले जी को दिया, जिन्होंने सन् 1885 ई0 तक उसका प्रकाशन किया। धड़फले जी द्वारा सम्पादित–प्रकाशित 'कवि वचन सुधा' में भारतेन्दु की आत्मा नहीं थी। भारतेन्दु बाबू द्वारा सम्पादित 'कवि वचन सुधा' का उद्देश्य अत्यन्त व्यापक था। सामाजिक बुराइयाँ दूर करना, राजनीतिक चेतना जगाना, भारत को स्वतंत्र कराना, नारी शिक्षा को बढ़ावा देकर पुरुष के समान ही समाज में नारी को स्थान देना पत्रिका का लक्ष्य बन गया था। भारतेन्दु ने 'कवि वचन सुधा' के माध्यम से हिन्दी भाषा का परिष्कार किया और खड़ी बोली को व्यवस्थित स्वरूप दिया है। उनके माध्यम से हिन्दी के 'हंसमुख' निबन्धों का उद्भव और विकास हुआ। हिन्दी भाषा को जनजीवन तक पहुँचाया और हिन्दी के पक्ष में जनमत तैयार किया। हिन्दी में निबन्धों के साथ यात्रा–वर्णन, हास्य–व्यंग्य साहित्य और खड़ी बोली की कविता को दिशा दी, हिन्दी को राजकाज की भाषा बनाने में योगदान किया। उन्होंने विधवा–विवाह, बाल–विवाह, भ्रूण हत्या, लड़के–लड़कियों में अन्तर जैसी सामाजिक बुराइयों को दूर करने का आह्वान किया। 'कवि वचन सुधा' के माध्यम से भारतेन्दु ने न केवल साहित्यिक बल्कि राजनीतिक चेतना जगाने का भी कार्य किया। अंग्रेजी सत्ता का मूलोच्छेद कर परतंत्रता समाप्त करने का आह्वान किया। इसके लिए विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने, देश में कल–कारखाने लगाने, कुटीर उद्योग, लघु–उद्योग लगाने का भी आहवान किया, जिससे देश आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र बन सके। हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में भारतेन्दु का आगमन एक ऐतिहासिक घटना थी। 'कवि वचन सुधा' जनता के हितों के लिए लड़ने वाले निर्भय सैनिक की तरह थी। भारतेन्दु बाबू ने पत्रकारों को सच्ची बातों का प्रकाशक और जन सामान्य का अधिवक्ता बतलाया। सर्वप्रथम उन्होंने ही अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली और कानून को दोषपूर्ण बतलाया। भारतेन्दु को अपने देश के धन का विदेश जाना सबसे अधिक खटकता था।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्वदेशी आन्दोलन के अग्रदूत थे। उनकी मान्यता थी कि कृषि उपज और कपड़ा–उद्योग

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

ही भारत की समृद्धि के आधार हैं। अंग्रेजों ने सबसे अधिक इन्हीं को बर्बाद करने की ठानी। स्वदेशी शिल्पों के सत्यानाश और विदेशी माल के आयात से चिंतित भारतेन्दु बाबू ने 'कवि वचन सुधा' के पांचवे वर्ष के सातवे अंक में छपा है–

''वस्त्र, काँच, कागज, कलम, चित्र खिलौने आदि
अवत सब पर देश सो नितहि जहासन लादि।''

'कवि वचन सुधा' की भाषा साधारण बोल–चाल की भाषा थी, जिसमें भाव–प्रवणता के साथ सहज प्रवाह था। निम्नलिखित रामनगर से पत्र की भाषा को स्पष्ट समझा जा सकता है। ''गत बुढ़वा मंगल में एक बात ऐसी अपूर्व हुई थी, सर्वदा स्मरण रहे, वह यह कि शुरू के दिन वायु इस वेग से बहती थी जिसने सब मेला इधर–उधर कर दिया और रामनगर के नीचे नावों का पहुंचना असम्भव हो गया। वरन श्री महराज विजयनगर के कच्छे इसी पार रह गये। परन्तु श्री महराज काशीराज ने जब देखा कि कच्छे आगे नहीं हटते तब अपने हाथियों को बुलावा भेजा। आज्ञा देते ही बड़े–बड़े मतंग नंग घड़ंग झूमते हुए एक संग गंगा जी में हल गए।'' समीचारावली के अन्तर्गत काव्यमय भाषा के स्थान पर सपाट बयानी का आश्रय लिया गया।

''लाहौर में धरणीकम्प हुआ था।

बंगाल–प्रान्त में इस वर्ष भली भाँति परिजन्म नहीं हुआ। बंगाल–प्रान्त में देश भाषा में 38 समाचार पत्र मुद्रित होते हैं। स्टेट सेक्रेटरी ने सेप्टेम्बर के अन्त तक हिन्दुस्तान के ऊपर 5403190 रूपयों की हुंडिया की इसमें इस देशों को 510036 रूपयों की हानि हुई।''

'कवि वचन सुधा' अपने उद्‌बोधन काल से ही बहुमुखी सुधार के लिए पाठकों को जागरूक किया, ''हे देश वासियों! इस निद्रा से चौकों। इनमें (अंग्रेजों के) न्याय के भरोसे मत फूले रहो, ये विधा (अंग्रेजी शिक्षा) कुछ काम न आवेगी। यदि तुम हाथ व्यापार सीखोगे तो तुम्हे कभी दैन्य न होगा, नही तो अन्त में यहाँ का सब धन विलायत चला जाएगा और तुम मुह बाये रह जाओगे।'' व्यंग्यात्मक शैली में अंग्रेजी राज्य के कर भार पर भारतेन्दु बाबू ने लिखा,'' चुंगी और टैक्स की निष्ठुरता को भी आपकी क्रूरता मात करती है। हम ऐसे कंगाली पर तुम इतना जुल्म प्रकट करते थे पर अमीरों और साहेब लोगों के थरम्यन्टीडोर और खस की टाटियों से तुम्हारा वश नहीं चलता।'' इस प्रकार 'कवि वचन सुधा' ने भारतवासियों की नवचेतना को जगाने तथा उन्हें कर्तव्य पथ पर अरूढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की। 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन भारतेन्दु ने 15 अक्टूबर 1873 ई0 को प्रारम्भ किया। मैगजीन के सम्पादक और प्रकाशक भारतेन्दु बाबू स्वयं ही थे। 'हरिश्चन्द्र मैगजीन'डिमाई चौपेजी आकार के चौबीस पृष्ठों में छपती थी। मुख्य पृष्ठ पर विषय–सूची अंग्रेजी में छपती थी। मैगजीन का प्रथम अंक चौबीस पृष्ठों का और दूसरे–तीसरे चौथे तथा पांचवे अंक क्रमशः पचास, बीस, सोलह और बयालीस पृष्ठों में थे। प्रत्येक पृष्ठ में दो कालम थे। 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' यद्यपि हिन्दी की साप्ताहिक पत्रिका थी। किन्तु उसमें हिन्दी से सम्बद्ध विषयों पर अंग्रेजी में लेख भी छपते थे, जो भारतीय सांस्कृतिक चेतना से ओत–प्रोत थे। भारतेन्दु ने जिस उम्र में पत्रकारिता में प्रवेश किया, वह उनकी किशोरावस्था थी। वे भावुक प्रकृति के थे। बचपन से किशोरावस्था तक उनका जीवन सुमधुर छन्दों के गुजनमय परिवेश में व्यतीत हुआ। अतः वे 'कवि वचन सुधा' के आरम्भिक काल में प्राचीन काल के उद्धार और संवर्द्धन में अत्यधिक प्रयत्नशील थे। बौद्धिक परिपक्वता के साथ पत्रकारिता चेतना भी अधिक विकसित हुई। अतः प्रौढ़ पत्रकारिता की झलक उनके 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' में दिखलाई पड़ती है।

'हरिश्चन्द्र मैगजीन' 'दसाश्वमेध घाट मुहल्ले के डाक्टर इं0 जे0 लाजरस के 'मेडिकल हाल प्रेस' में छपती थी। पत्रिका का वार्षिक मूल्य छः रूपये था। इसका मुद्रण निर्दोश और आकर्षक हुआकरता था। 'हरिश्चन्द्र' के कुल आठ अंक (15 मई, सन् 1874 ई0 तक) प्रकाशित हुए। जून, सन् 1874 ई0 से उसका नाम बदलकर 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' रखा गया। चन्द्रिका का आकार''मैगजीन' से छोटा कर दिया गया किन्तु प्रकाशन क्रम 'मैगजीन' से सम्बद्ध रखा गया। हरिश्चन्द्र चन्द्रिका का सिद्धान्त वाक्य था–

विद्वत्कुलामल स्वान्त्व कुमदा मोददायिका।
आर्याज्ञान तमोहन्त्री श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका।।''

भारतेन्दु सम्पादित 'चन्द्रिका' अपनी शीतल स्निग्ध ा किरणों से सन् 1880 ई0 तक हिन्दी जगत को रसाप्यायित करती रही। इस पत्रिका का प्रकाशन जब अनियमित होग या तो पण्डित मोहन लाल विष्णुलाल पाण्ड्या ने इसे अपने हाथ में ले लिया और इसका नाम 'मोहन चन्द्रिका' कर दिया। इस पत्र के साथ दूसरे वर्ष ही पण्डित दामोदर शास्त्री द्वारा सम्पादित और श्री नाथजी से प्रकाशित विद्या थी पत्र भी संयुक्त हो गया। 'मोहन चन्द्रिका' के सम्पादक श्री दोमोदर शास्त्री थे। 'मोहन चन्द्रिका' के कुछ पृष्ठ अंग्रेजी में भी छपते थे। लगातार चार वर्षों तक संयुक्त रूप से पत्रिका निकलती रही। भारतेन्दु के सम्पादन काल में 'चन्द्रिका' में जो प्रखर सामाजिक और साहित्यिक चेतना थी, वह पाण्ड्य जी ने सम्पादन काल में न रही। इस प्रकार 'चन्द्रिका' में आठ वर्षों तक हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा की। सन् 1884 ई0 में पत्र की स्थिति से दुखित हो बाबू राधाकृष्ण दास के अनुरोध पर 'नवोदित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' का प्रकाशन

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

स्वयं भारतेन्दु जी ने किया। इसके दो ही अंक निकल पाये कि भारतेन्दु जी नहीं रहे। भारतेन्दु बाबू की प्रसिद्ध पहेली इसी पत्रिका में छपी थी–

"भीतर–भीतर सब रस चूसैं
बाहर से तन–मन–धन मूसैं
जाहिर बातन में आति तेज,
क्यों सखि, साजन! नहिं अंगरेज।

'हरिश्चन्द्र मैगजी' और 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' नाम भेद से दो होकर एक ही पत्रिका थी। 'मैगजीन' के कुल आठ अंक प्रकाशित हुए, जिनमें आधुनिक हिन्दी भाषा और आरम्भिक साहित्य के विकास की प्रौढ़ता तथा साहित्यिक पत्रकारिता की झलक दिखाई पड़ती है। इसके 8 अंकों में कुल 143 रचनाएँ प्रकाशित हुईं। अधिकतर रचनाएँ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की थीं। पत्रिका अब दुर्लभ है। 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' पत्रकारिता के मलू स्वर (विचार की प्रधानता) को अभिव्यक्त करने वाली पत्रिका थी। उसके किसी भी अंक में सम्पादकीय नहीं लिखा गया, परन्तु प्रत्येक लेख विचार प्रधान रहा है, जो समकालीन कम सत्य के सन्दर्भ में लिखा गया था। पत्रकार निर्भीक और राष्ट्रीय चेतना से प्रौढ़ हो, तभी वह देश और समाज दोनों का मंगल कर सकता है। उन्होंने अपने 'मैगजीन' के प्रथम अंक में यूरोप के प्रति भारतवासियों का पत्र शीर्षक निबन्ध में प्रश्नोत्तर शैली में जो विचार प्रकट किये थे, वे उनकी राष्ट्रीय चेतना और निर्भीक पत्रकारिता के सबल प्रमाण है। उन्होंने अंग्रेजों से पूछा था, "आप इंग्लैण्ड के हो या हमारे? उत्तर में लिखा–"यदि इंग्लैण्ड के हैं, तो क्यों अपना घर बार, साथी–संगती आरोसी–परोसी और अपने यहाँ के सुख–आनन्द छोड़कर यहाँ आ बसे ? यदि आप हमारे हैं तो क्यों हमारे देश को इतना पीड़ित कर रहे हैं ? क्यों हम लोगों के निमित्त अनिष्ट प्रयत्न करते और हम लोगों में क्यों इतनी रखे रहते हैं ? आप किसी में हैं या नहीं। यदि आप संसार में हैं तो उसका सब प्रकार बुरा क्यों चाहते हैं तो उसे अजा सी बलि क्यों देते हैं।"

कहा जाता है कि प्रबुद्ध पत्रकार का सबसे बड़ा गुण उसकी प्रगतिशील दृष्टि होती है। प्रगतिशील दृष्टि से साहित्य, समाज और देश का विकास होता है। भारतेन्दु की दृश्टि भी प्रगतिशील थी। उन्होंने अपनी पत्रिका के माध्यम से भारतीय समाज को 'प्रगतिशील दृष्टि प्रदान करने का प्रयत्न किया था। उन्होंने 'द प्रजेन्ट स्टेट आफ द मिडिल मैन आफ द एन. डब्ल्यू. प्रॉविन्स' शीर्षक लेख में लिखा था, "उत्तर पश्चिम प्रदेश की जनता पुरातनपंथी है। वह किसी भी नयी विचारधारा को स्वीकार नहीं करना चाहती, चाहे वे सामाजिक, नैतिक या बौद्धिक प्रगति के क्यों न हो। इसलिए उनकी प्रगति बड़ी धीमी है।"

'हरिश्चन्द्र मैगजीन' में पाठकों के पत्र, पुस्तक समीक्षा आदि का प्रकाशन होता था। यह निर्भीक, राष्ट्रीय चेतना से युक्त प्रगतिशील विचार और सांस्कृतिक उन्मेष के लिए हिन्दी की आदर्श–पत्रकारिता का मानदण्ड स्थापित किया। हरिश्चन्द्र मैगजीन जहाँ एक ओर हिन्दी पत्रकारिता का आदर्शस्वरूप स्थापित किया, वहीं उसने खड़ी बोली को व्यावहारिक और चलता रूप देने का भी प्रयास किया। इस कारण हिन्दी गद्य शैली के विकास में इसका अंशदान श्लाध्य है। उन्होंने 'कवि वचन सुधा' के सम्पादन के साथ गद्य लिखना शुरू किया और 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' के साथ हिन्दी गद्य का स्वरूप स्थिर किया। उन्हें इस प्रयास से असाधारण सफलता मिली। इसीलिए सन् 1873 ई0 को हिन्दी गद्य के अभिजात स्वरूप के उद्भव का वर्ष माना। उन्होनें मैगजीन के माध्यम से हिन्दी गद्य को अभिनव स्वरूप देने का प्रयत्न किया। उन्होंने मैगजीन के प्रथम अंक में अंग्रेजी में प्रकाशित 'हिन्दी भाषा' शीर्षक लेख में लिखा था, "हमारी भाषा का पहला उद्देश्य विचारों को सर्वजन हिताय प्रकृत और सरल ढंग से प्रकट करना है। ऐसा भी एक निरपेक्ष सामंजस्य है जो मनमानी के अरबी–फारसी के प्रयोगों और शब्दों से उतना ही विचार वैमनस्य रहता है, जिसका संस्कृत की तत्सम् शब्दावली से।" सरल, सुबोध और प्रवाहमय हिन्दी गद्य के प्रचलन में 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' का सर्वाधिक योग रहा है।

हिन्दी वर्तनी की समस्या जो आज तक नहीं सुलझी। भारतेन्दु ने इसमें एकरूपता लाने का प्रयास किया। उदाहरण के लिए वे हिन्दी के लिए 'हिन्दी' लिखते थे। अनुनासिक और चन्द्र बिन्दु के लिए वे 'बिन्दी' का प्रयोग करते थे। क्रिया पदों में 'चाहिए' के स्थान पर 'चाहिए', गयी के स्थान पर 'गई' लिखते थे। विभक्ति को संज्ञा या सर्वनाम से पृथक लिखते थे। उन्होंने इन वर्तनीयों का 'मैगजीन' में यथा स्थान प्रयोग किया है। गद्य की विद्या में निबन्ध उत्कृष्ट विद्या है। इसका अपना लालित्य है। हिन्दी को नई चाल में ढालने का पहला माध्यम यही विद्या बनीं। भारतेन्दु इस विद्या के श्रेष्ठ प्रणेता थे। उनके निबन्धों में व्यक्तित्व विचार, भावबोध और गद्य शैली की सहज अभिव्यक्ति मिलती है। इनके निबन्धों में जहाँ एक ओर राष्ट्रीय विचारधारा की अभिव्यक्ति है, वहीं दूसरी ओर हिन्दी के विकसित स्वरूप के दर्शन होते हैं। हिन्दी के सर्वांगीण विकास में 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' का बहुत बड़ा योगदान है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'कवि वचन सुधा' और 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' के बाद नारी शक्ति के विकास और उसे समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए 'बालाबोधिनी' नाम पत्रिका प्रकाशित की। उन्होंने नारी जगत को आधुनिक शिक्षा, युग के साथ चलने की प्रेरणा देने, पुरुष के बराबर

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

स्थान दिलाने के संकल्प के साथ 'बालाबोधिनी' का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। 'बालाबोधिनी' हिन्दी में प्रकाशित होने वाली नारी समाज की पहली मासिक पत्रिका थी। उसका पहला अंक 1 जनवरी, बृहस्पतिवार सन् 1874 ई0 पौष, (सं0 1930 विक्रमी) को प्रकाशित हुआ। 'बालाबोधिनी' हिन्दी में प्रकाशित होने वाली नारी समाज की पहली मासिक पत्रिका थी। उसका पहला अंक 1 जनवरी, बृहस्पतिवार सन् 1874 ई0 पौष, सं0 1930 विक्रमी को प्रकाशित हुआ। 'बालाबोधिनी' बनारस के मेडिकल हाल प्रेस से मुद्रित हुई थी। पत्रिका के सम्पादक–प्रकाशक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे। उनका वार्षिक मूल्य दो रूपए था। प्रथम वर्ष के प्रथम अंक को छोड़कर किसी भी अंक में मूल्य का उल्लेख नहीं किया गया था। इसका प्रकाशन चार वर्षों तक हुआ। चौथा वर्ष पूरा होने पर पत्रिका को 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' में सम्मिलित कर लिया गया।

'बाला बोधिनी' के प्रथम वर्ष में 12 अंक 8 5 आकार में प्रकाशित हुए और दूसरे से चौथे वर्ष तक के 9'' 6'' आकार में पत्रिका को प्रति मास प्रकाशित करने की घोषणा की गयी थी किन्तु उसके पहले अंक के बाद ही भारतेन्दु बीमार पड़ गये। इस कारण उसका संयुक्तांक प्रकाशित हुआ। प्रायः अनेक बार संयुक्तांक निकालने पड़े थे। पत्रिका के प्रत्येक अंक में बारह पृष्ठ होते थे। वर्ष के लिए जिल्द और संख्या में नम्बर का प्रयोगा होता था। अंग्रेजी तिथि के साथ हिन्दी महीना, दिन का और संवत का उल्लेख किया जाता था।

'बाला बोधिनी' के पृष्ठांक पर सिद्धान्त वाक्य के रूप में निम्नलिखित छन्द प्रकाशित होता था–

''जो हरि सोई राधिका जो शिव सोई शक्ति।
जो नारि सोई पुरुष या में कछु न विभक्त।।
सीता अनुसूया सती अरून्धती अनुहारि।
शील लाज विद्यादि गुण लहौ सकल जग नारि।।
पित, पति सुत कर तल कमल लालित ललना लोग।
पढ़ै गुनै सीखैं सुनै नासै सब जग सोग।।
वीर प्रसविनी बधु वधू होई हीनता खोय।
नारी नर अरधंग को साँचेहि स्वामिनि होय।।''

इस आदर्श वाक्य के साथ 'स्त्री जनो की प्यारी हिन्दी भाषा की सुधारी' शीर्षक वाक्य भी प्रकाशित होता था। इसमें किसी भी अंक में किसी तरह की सम्पादकीय टिप्पणी और सम्पादकीय नहीं प्रकाशित हुआ। वस्तुतः इस पत्रिका का उद्देश्य भारतीय नारी समाज को सुशोभित कर भारतीय आदर्श नारी और पुरुषों की उत्तम सहधर्मिणी बनाना था।'' इसीलिए इसमें जो लेख प्रकाशित किये गये सभी स्त्री शिक्षा पूर्ण और उन्हें सुगृहणी बनने में योग देने वाले थें। इनमें जिन विषयों पर लेख प्रकाशित हुए थे उनमें शीलवती, सुलोचना की कथा, सती चरित्र, सीता अनुसूया मिलन, कुल–बन्धुओं को चेतावनी, पतिव्रत, शिशुपालन प्रमुख थे। इस लेखों का उद्देश्य नारी चरित्र का निर्माण और नारी समाज को आधुनिक दृष्टि प्रदान करना था, पर भारतीय सांस्कृतिक चेतना को जीवित रखते हुए। 'बालाबोधिनी' में नारी समाजोपयोगी नाटक, कविता और नीति विषयक कविताएँ भी प्रकाशित की जाती थी। पत्रिका के लेखकों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ऐश्वर्य नारायण सिंह, दामोदर शास्त्री, बिहारी लाल चौबे, गिरिधर दास, सरयू प्रसाद, हीरा लाल आदि के नाम उल्लेखनीय है। इस प्रकार बाला बोधिनी के माध्यम से खड़ी बोली और गद्य का विकसित और साफ–सुथरा रूप सामने आया। नयी चाल के हिन्दी भाषा के प्रसार में उस पत्रिका ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उसमें कभी भी किसीप्रकार का विज्ञापन नही प्रकाशित हुआ। इस प्रकार भारतीय नारी को कुण्ठा और संत्रास से हटाकर आदर्श भारतीय नारी बनाने में पत्रिका का प्रयत्न सराहनीय है। इस प्रकार भारतेन्दु द्वारा सम्पादित पत्रों के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि भारतेन्दु द्वारा सम्पादित पत्रों ने हिन्दी पत्रकारिता का आदर्श स्वरूप स्थापित किया। हिन्दी गद्य शैली के विकास में इनका योगदान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आ0 महावीर प्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता–इन्द्रसेन सिंह।
2. हिन्दी पत्रकारिता का वृहद इतिहास–डॉ0 अर्जुन तिवारी।
3. हिन्दी पत्रकारिता नये प्रतिमान–डॉ0 बच्चन सिंह।
4. छायावाद युगीन साहित्यिक पत्रकारिता–रमेश चन्द्र त्रिपाठी।
5. हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप और आयाम– राधेश्याम शर्मा।
6. पत्रकारिता सन्दर्भ कोष–डॉ0 रामप्रकाश गुप्त व डॉ0 सुधीन्द्र कुमार।
7. हिन्दी पत्रकारिता का विकास–एन0सी0 पन्त।
8. हिन्दी पत्रकारिता की रूप रेखा, खण्ड–2, पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त–जितेन्द्र एन0सी0 पन्त, मनोज कुमार।
9. हिन्दी की सर्वोदय पत्रकारिता–डॉ0 मृदुला वर्मा।
10. समाचार पत्रों का इतिहास–अम्बिका प्रसाद वाजपेयी।
11. हिन्दी पत्रकारिता 'भारतेन्दु पूर्व से छायावादोत्तर काल तक'–डॉ0 धीरेन्द्र नाथ सिंह।

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*